संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. रामचंद्र शुक्ल रचनावली (संपा. नामवर सिंह, आशीष त्रिपाठी), 2016, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
2. शर्मा, रामविलास, 1994, निराला की साहित्य साधना (द्वितीय खंड), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
3. शर्मा, रामविलास, 2017, भारतेंन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
4. शर्मा, रामविलास, 2017, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, 2012, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा
6. सिंह, नामवर 2017, दूसरी परम्परा की खोज, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
7. सिंह, नामवर, 2008, कहानी नई कहानी, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन
8. सिंह, नामवर, 2013, छायावाद, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
9. सिंह, नामवर, 2018, इतिहास और आलोचना, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
10. सिंह, नामवर, 2021, कविता के नये प्रतिमान, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

11. हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली (संपा. मुकुन्द द्विवेदी), 2012, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

सहायक ग्रंथ

1. अग्रवाल, रोहिणी, 2015, साहित्य का स्त्री-स्वर, इलाहाबाद: साहित्य भंडार
2. अग्रवाल, रोहिणी, 2020, कथालोचना के प्रतिमान, पंचकूला: आधार प्रकाशन
3. अग्रवाल, वासुदेव शरण, 1969, पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन
4. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन, 2012, साहित्य, संस्कृति और समाज परिवर्तन की प्रक्रिया (संपा.-कृष्णदत्त पालीवाल), नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन
5. अवस्थी, देवीशंकर, 2013, आलोचना और आलोचना, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन
6. अवस्थी, देवीशंकर, 2019, नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
7. अवस्थी, देवीशंकर, 2021, रचना और आलोचना, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन
8. अवस्थी, बच्चूलाल, 1993, पाणिनीयशिक्षा, उज्जैन: श्रीनिवासरथ
9. उपाध्याय, कृष्णदेव, 2014, लोकसंस्कृति की रूपरेखा, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन
10. ऑर्सिनी, फ्रांचेस्का, 2011, हिन्दी का लोकवृत्त 1920-1940 (अनु. नीलाभ), नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन
11. कमलेश्वर, 2015, नयी कहानी की भूमिका, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

12.कुमार, निर्भय, 2019, शमशेर बहादुर सिंह की आलोचना-दृष्टि, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

13.कुमार, शैलेश, मधुप कुमार, नीलम सिंह, 2016, अभिनव संस्कृत काव्यशास्त्र: नामवर के नोट्स, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

14. कॉडवेल, क्रिस्टोफर, 2015, विभ्रम और यथार्थ (अनु.-भगवान सिंह), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

15.खरे, रेखा, 2015, निराला की कविताएँ और काव्यभाषा, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

16.खरे, विष्णु, 2004, आलोचना की पहली किताब, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

17. गर्ग, मृदुला, 2007, चुकते नहीं सवाल (आलोचनात्मक लेख-संग्रह), नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन

18.ग्राम्शी, अंतोनियो, 2020, साहित्य, संस्कृति और विचारधारा, दिल्ली: गार्गी प्रकाशन

19.चट्टोपाध्याय, देवीप्रसाद, 2016, भारतीय दर्शन: सरल परिचय, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

20.चतुर्वेदी, रामस्वरूप, 2010, मध्यकालीन हिंदी काव्यभाषा, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

21.चतुर्वेदी, रामस्वरूप, 2013, इतिहास और आलोचक-दृष्टि, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

22.चतुर्वेदी, रामस्वरूप, 2021, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

23. चेकाल्स्का, रेनाता, 2018, शब्दों का मंडल (अनु.- मदन सोनी), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

24.चौहान, शिवदानसिंह, 1955, साहित्यानुशीलन, नई दिल्ली: आत्माराम एंड संस

25.जैन, डॉ. निर्मला, 2000, हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

26. जैन, डॉ. निर्मला, 2017, काव्य-चिंतन की पश्चिमी परम्परा, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

27. जोशी, ज्योतिष, 2013, आलोचना की छवियाँ, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

28.जोशी, राजेश, 2015, समकालीनता और साहित्य, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

29. ज्ञानरंजन, कमला प्रसाद (संपादक), 2019, मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

30. टेटे, वंदना, 2020, वाचिकता: आदिवासी दर्शन, साहित्य और सौंदर्यबोध, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

31.ठाकुर, मणीन्द्रनाथ, 2022, ज्ञान की राजनीति: समाज अध्ययन और भारतीय चिंतन, नोएडा: सेतु प्रकाशन

32. डबास, डॉ. पूर्णसिंह, 2016, हिंदी में देशज शब्द, इलाहाबाद: साहित्य भंडार

33.डॉ. नगेन्द्र ग्रंथावली: खंड छह, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस

34.डॉ. नगेन्द्र, 1953, रीतिकाव्य की भूमिका, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस

35.डॉ. नगेन्द्र, 1955, भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, नई दिल्ली: ओरिएंटल बुक डिपो

36. डॉ. नगेन्द्र, 1968, आस्था के चरण, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस

37. तलवार, वीरभारत, 2017, रस्साकशी: 19वीं सदी का नवजागरण और पश्चिमोत्तर प्रांत, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

38.तिवारी, डॉ. निर्मला तथा डॉ. राष्ट्रबंधु, 2011 व्याकरण, काव्यशास्त्र और भाषा-विज्ञान के दिनमान: आचार्य-कवि किशोरीदास वाजपेयी, इलाहाबाद: विभोर प्रकाशन

39.तिवारी, डॉ. भोलानाथ, 2011, भाषाविज्ञान, नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन

40. तिवारी, डॉ. सियाराम, 2015, काव्यभाषा, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

41. तिवारी, नित्यानंद, 2019, साहित्य का शास्त्र, नई दिल्ली: स्वराज प्रकाशन

42. तिवारी, रामचंद्र, 2010, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

43. तिवारी, रामचंद्र, 2021, भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र व हिन्दी आलोचना, वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन

44.त्रिपाठी, डॉ. रामदेव, 1977, भाषाविज्ञान की भारतीय परम्परा और पाणिनि, पटना: बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

45. त्रिपाठी, डॉ. रामसागर , 2017, आनन्दवर्धनाचार्यविरचितः ध्वन्यालोकः प्रथम उद्योतः, नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

46.त्रिपाठी, डॉ. रामसागर , 2017, आनन्दवर्धनाचार्यविरचितः ध्वन्यालोकः द्वितीय उद्योतः, नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

47.त्रिपाठी, डॉ. श्रीकृष्णमणि (व्याख्याकार), 2016, कविराजश्रीराजशेखरप्रणीता काव्यमीमांसा, वाराणसी: चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन

48. त्रिपाठी, विश्वनाथ, 1999, हिन्दी आलोचना, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

49. त्रिपाठी, विश्वनाथ, 2015, उपन्यास का अंत नहीं हुआ है, इलाहाबाद: साहित्य भंडार

50. त्रिपाठी, विश्वनाथ, 2017, व्योमकेश दरवेश, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

51. द तासी, गार्सा, 2021, हिंदुस्तानी भाषा और साहित्य 1850-1860 (अनु. किशोर गौरव), नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

52.दास, डॉ. श्यामसुंदर, 2017, साहित्यालोचन, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

53.दुबे, श्यामाचरण, 2016, मानव और संस्कृति, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

54.द्विवेदी, डॉ. देवीशंकर, 1964, भाषा और भाषिकी, आगरा: लक्ष्मीनारायन अग्रवाल

55.द्विवेदी, महावीरप्रसाद, 1928, आलोचनाञ्जलि, प्रयाग: इंडियन प्रेस लिमिटेड

56.नवल, नंदकिशोर, 2011, हिंदी आलोचना का विकास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

57. नारंग, गोपीचंद, 2014, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी

58.पंत, सुमित्रानंदन, 2019, पल्लव, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

59. परशुराम, 2019, आलोचना का सांस्कृतिक आयाम, हरियाणा: संभव प्रकाशन

60. पाण्डेय, कैलाश नाथ, 2019, हिन्दी आलोचना का पुनःपाठ, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

61.पाण्डेय, कैलाशनाथ, 2012, भाषा-विज्ञान का रसायन, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

62. पाण्डेय, मैनेजर, 2009, साहित्य और इतिहास-दृष्टि, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

63. पाण्डेय, मैनेजर, 2017, आलोचना की सामाजिकता, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

64.पाण्डेय, मैनेजर, 2019, शब्द और साधना, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

65. पाण्डेय, शशिभूषण 'शीतांशु', 2021, कहानी की अर्थान्वेषी आलोचना, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

66. पालिवाल, कृष्णदत्त (संपादक), 2016, हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध भूमिकाएँ (दो खंड), नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल

67. पालीवाल, कृष्णदत्त, 2011, आलोचक अज्ञेय की उपस्थिति, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

68.प्रणय कृष्ण, 2012, प्रसंगवश: साहित्य और समाज की चंद बहसें, इलाहाबाद: स्पॉट क्रिएटिव सर्विसेज

69. प्रणय कृष्ण, 2014, विमर्श और आलोचना, इलाहाबाद: स्पॉट क्रिएटिव सर्विसेज

70. प्रसाद, जयशंकर, 2016, काव्य और कला तथा अन्य निबंध, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

71.प्रियदर्शन, 2018, ग्लोबल समय में कविता, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

72.प्रियदर्शन, 2018, ग्लोबल समय में गद्य, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

73.प्रेमघन सर्वस्व (द्वितीय भाग), 1950, संपादक- श्री प्रभाकरेश्वर प्रसाद उपाध्याय तथा श्री दिनेश नारायण उपाध्याय, प्रयाग: हिंदी साहित्य सम्मेलन

74. फ्रायड, सिगमंड, 2011, सपनों का मनोविज्ञान (अनु.- अचलेश चंद्र शर्मा), दिल्ली: नया साहित्य

75.बारलिंगे, डॉ. सुरेन्द्र, 1963, सौन्दर्य-तत्त्व और काव्य-सिद्धांत (अनु.- डॉ. मनोहर काळे), नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस

76.मलयज, 1985, रामचंद्र शुक्ल, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

77. मलयज, 2012, निबंधों की दुनिया (संपादक- रामेश्वर राय), नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

78. मानव, विश्वंभर, 2012, रस छंद अलंकार, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

79. मालवीय, डॉ. सुधाकर, 2017, हिंदी दशरूपक, वाराणसी: चौखम्भा कृष्णदास अकादमी

80. माहेश्वरी, अरुण, 2016, आलोचना के कब्रिस्तान से, नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड.

81.मिश्र, अच्युतानंद, 2021, कोलाहल में कविता की आवाज़, पंचकूला: आधार प्रकाशन

82. मिश्र, विद्यानिवास, 1978, भारतीय भाषाशास्त्रीय चिंतन की पीठिका, पटना: बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद

83.मुक्तिबोध, गजानन माधव, 1992, नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

84. मुक्तिबोध, गजानन माधव, 2015, कामायनी: एक पुनर्विचार, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

85.मुक्तिबोध, गजानन माधव, 2018, नयी कविता का आत्मसंघर्ष, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

86.मोहन राकेश, 2013, साहित्य और संस्कृति, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

87. यायावर, भारत, 2012, नामवर होने का अर्थ, नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन

88. राजे, सुमन, 2019, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ

89.वर्मा, डॉ. सत्यकाम, 1964, भाषातत्व और वाक्यपदीय, वाराणसी: भारतीय प्रकाशन

90. वर्मा, निर्मल, 2017, साहित्य का आत्म-सत्य, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

91.वर्मा, महादेवी, 2018, सात भूमिकाएँ (संपादक- दूधनाथ सिंह), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

92.वाजपेयी, अशोक, 2021, फ़िलहाल, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

93.वाजपेयी, नंददुलारे

94. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, 2017, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

95. विट्गेन्स्टाइन, लुडविग, 2016, ट्रैक्टेटस लॉजिको-फिलोसॉफिकस (अनु.- अशोक बोहरा, नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ

96. वुल्फ, विर्जिनिया, 2018, अपना एक कमरा (अनु.- मोज़ेज़ माइकेल), नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

97. वेलेक, रेने तथा ऑस्टिन वारेन, 2012, साहित्य-सिद्धांत (अनु.-बी. एस. पालीवाल), इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

98.शंकर, उदय, 2020, नई कहानी आलोचना: नामवर सिंह की कहानी-आलोचना का विस्तृत आलोचना, ग़ाज़ियाबाद: अंतिका प्रकाशन

99.शंभुनाथ (संपादक), 2012, शब्द का संसार: कविता, भाषा और मिथकीय लीला पर विमर्श, कोलकाता: आनंद प्रकाशन

100. शंभुनाथ, 2022, हिन्दी नवजागरण भारतेंदु और उनके बाद, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

101. शर्मा देवेन्द्रनाथ(भाष्यकार), 1985, आचार्य भामह-विरचित काव्यालंकार, पटना: बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्.

102. शर्मा, कृष्णदत्त, 2013, रामविलास शर्मा: आलोचना के हक में, नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड.

103. शर्मा, कृष्णदत्त, 2017, भाषा आलोचना और आलोचक-दृष्टि, नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड.

104. शर्मा, गोविन्दप्रसाद, 2021, लघुसिद्धांतकौमुदी, वाराणसी: चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन

105. शर्मा, देवेन्द्रनाथ, 2015, काव्य के तत्त्व, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

106. शर्मा, राममूर्ति, 2008, भारतीय दर्शन की चिंतनधारा, वाराणसी: चौखम्भा पब्लिशर्स

107. शर्मा, रामविलास , 2011, परम्परा का मूल्यांकन, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

108. शर्मा, रामविलास, 1989, भारत की भाषा समस्या, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

109. शर्मा, रामविलास, 2002, विराम चिह्न, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

110. शर्मा, रामविलास, 2007, इतिहास दर्शन, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

111. शर्मा, रामविलास, 2015, भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी

112. शर्मा, रामविलास, 2017, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

113. शर्मा, रामविलास, 2020, भारतीय साहित्य की भूमिका, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

114. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, सं. 2069 वि., हिंदी साहित्य का इतिहास, वाराणसी: नागरीप्रचारिणी सभा

115. शुक्ल, आशुतोष, 2021, भाषा में लैंगिकता, नई दिल्ली: ज्ञानपीठ प्रकाशन

116. शुक्ल, शशांक, 2022, एक आलोचक की डायरी, नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड.

117. सहाय, रघुवीर, 2010, संचयिता (संपादक- कृष्ण कुमार), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

118. साही, विजयदेव नारायण, 1993, जायसी, इलाहाबाद: हिंदुस्तानी एकेडेमी

119. सिंह, केदारनाथ, 2016, आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब-विधान, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

120. सिंह, गोपेश्वर, 2014, आलोचना का नया पाठ, नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन

121. सिंह, नामवर (संपादक), 2018, कला और साहित्य चिंतन: कार्ल मार्क्स (अनु.- गोरख पांडेय), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

122. सिंह, नामवर, 2008, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

123. सिंह, नामवर, 2013, हिंदी समीक्षा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल (संपादक- ज्ञानेन्द्र कुमार संतोष), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

124. सिंह, नामवर, 2014, आलोचना और विचारधारा, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

125. सिंह, नामवर, 2016, कविता की ज़मीन और ज़मीन की कविता, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

126. सिंह, नामवर, 2018, आलोचना और संवाद, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

127. सिंह, नामवर, 2018, रामविलास शर्मा (संपादक- ज्ञानेन्द्र कुमार संतोष), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

128. सिंह, नामवर, 2019, वाद विवाद संवाद, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

129. सिंह, नामवर, 2021, पन्नों पर कुछ दिन (संपादक- विजय प्रकाश सिंह), नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

130. सिंह, पवन कुमार, 2020, हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की भाषा, नई दिल्ली: रचनाकार पब्लिशिंग हाउस.

131. सिंह, प्रो. दिलीप (संपादक), 2015, भाषा, संस्कृति और लोक, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

132. सिंह, प्रो. दिलीप, 2011, भाषा का संसार, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

133. सिंह, बच्चन, 2009, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन

134. सिंह, योगेंद्र प्रताप, 1985, भारतीय काव्यशास्त्र, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

135. सिंह, योगेंद्र प्रताप, 2005, काव्यभाषा, अलंकार रचना तथा अन्य समस्याएँ, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

136. सिंह, राजेन्द्रप्रसाद, 2011, हिंदी की लंबी कविताओं का आलोचना-पक्ष, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

137. सिंह, राहुल, 2017, विचार और आलोचना, दिल्ली: अनन्य प्रकाशन

138. सिंह, राहुल, 2022, हिंदी कहानी: अंतर्वस्तु का शिल्प, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

139. सिंह, विजयबहादुर और राधावल्लभ त्रिपाठी (संपादक), 2022, संस्कृति के प्रश्न और रामविलास शर्मा, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

140. सिंह, वैभव, 2020, कहानी: विचारधारा और यथार्थ, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

141. सिंह. नामवर, 2012, साथ साथ (संपादक- आशीष त्रिपाठी), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

142. सुजाता, 2021, आलोचना का स्त्री-पक्ष, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

143. हिरियन्ना, एम., 2018, भारतीय दर्शन की रूपरेखा, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

अंग्रेजी पुस्तकें

1. Arnold, Matthew, 2009, Essays in Criticism (ed.-Aditya Nandwani), New Delhi: Anmol Publication.
2. Berger, John, 2008, Ways of Seeing, UK: Penguin Books
3. Bloom, Harold, 1979, Deconstruction and Criticism, London and Henley: Routledge and Kegan Paul.
4. Bloomfield, Leonard, 2012, Language, New Delhi: Motilal Banarasidass Publishers Private Limited.

5. Botterill, George and Peter Carruthers, 2003, The Philosophy of Psychology, Cambridge University Press (Virtual Publishing)
6. Cassirer, Ernst, 2005, Language and Myth (trans. Susanne K. Langer), New York: Dover Publications Inc.
7. Chapman, Siobhan and Christopher Routledge, 2009, Key Ideas in Linguistics and the Philosophy of Language, Edinburgh: Edinburgh University Press.
8. Chomsky, Noam, 1992, How the World Works, The Real Story Series.
9. Chomsky, Noam, 1998, On Language, New York London: The New Press.
10. Chomsky, Noam, 2000, New Horizons in the study of Language and Mind, London: Cambridge University Press
11. Chomsky, Noam, 2006, The Architecture of Language (Ed. by- Nirmalangshu Mukherji, Bibudhendra Narayan Patnaik, Ramakant Agnihotri), New Delhi: Oxford India Press.
12. Correa, Delia da Sousa and W.R. Owens, 2010, The handbook to Literary Research, London and New York: Routledge.

13. Devy, G. N., 2002, Indian Literary Criticism: Theory and Interpretation, Hyderabad: Orient Longman.
14. Dreyfus, Hubert L. and Paul Rabinow, 1983, Michel Foucault: Beyond Structuralism and Hermeneutics, Chicago: University of Chicago Press.
15. Eagleton, Terry, 1990, The Significance of Theory, UK: Basil Blackwell.
16. Eagleton, Terry, 2006, Literary Theory: An Introduction, Blackwell Publishing
17. Eliot, T. S., 2017, The Sacred Wood: Essays on Poetry and Criticism, Kolkata: Books Way
18. Empson, William, 1949, Seven Types of Ambiguity, London: Chatto and Windus
19. Foucault, Michel, 2005, The Order of Things, London and New York: Routledge.
20. Heinrichs, Jay, 2017, Thank You for Arguing: What Aristotle, Lincoln and Homer Simpson can Teach Us About the Art of Persuasion, New York City: Three Rivers Press.
21. Hudson, R. A., 2021, Sociolinguistics, New Delhi: Cambridge University Press.

22. Leavis, F.R., 1964, The Common Pursuit, New York University Press.
23. Matilal, Bimal Krishna, 1992, The World and The Word: India's Contribution to the Study of Language, Delhi: Oxford University Press
24. Mills, Sara, 1997, Discourse, London and New York: Routledge.
25. Mishra, Pankaj, 2017, Age of Anger: A History of the Present, New Delhi: Juggernaut Books.
26. O'Grady, Williams and John Archibald (ed.), 2016, Contemporary Linguistics Analysis: An Introduction (8th Edition), Toronto: Pearson.
27. Pinker, Steven, 2015, The Language Instinct, UK: Penguin Random House
28. Pinker, Steven, 2015, The Sense of Style: The Thinking Person's Guide to Writing in the 21st Century, UK: Penguin Random House
29. Quadri, Syed Mohammad Haseebuddin, 2019, The Craft of Language and Literary Research, New Delhi: Atlantic Publishers.

30. Robins, R. H., 1976, A Short History of Linguistics, London: Longman group Limited.
31. Sapir, Edward, 2018, Language: An Introduction to the Study of Speech, Alpha Editions.
32. Satre, Jean-Paul, 2000, Words (trans.- Irene Clephane), UK: Penguin Books
33. Selden, Raman, Peter Widowson, Peter Brooker, 2007, A Readers Guide to Contemporary Literary Theory, Pearson Education.
34. Tagore, Rabindranath, 2020, Nationalism, Delhi: Jyoti Enterprises.
35. Waugh, Patricia, 2006, Literary Theory and Criticism: An Oxford Guide, Oxford University Press.
36. Wellek, Rene, 1981, A History of Modern Criticism: 1750-1950, London: Cambridge University Press
37. Wordsworth and Coleridge, 1968, Lyrical Ballads (ed by-R. L. Brett and A. R. Jones), London and New York: Routledge.

कोश

1. संस्कृत-हिंदी कोश, वामन शिवराम आप्टे, नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, 2021
2. उर्दू-हिंदी कोश, आचार्य रामचंद्र वर्मा तथा बद्रीनाथ कपूर, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन
3. बृहत् हिंदी कोश, कालिका प्रसाद-राजवल्ल्भ सहाय-मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड
4. श्रीमदमरसिंहविरचित: अमरकोश:, व्याख्याकार- पं. विश्वनाथ झा, नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास
5. हिंदी साहित्य ज्ञानकोश (सात खंड), प्रधान संपादक-शंभुनाथ, कोलकाता: भारतीय भाषा परिषद्, वितरक- नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

पत्रिकाएँ

1. बहुवचन, 50, जुलाई-सितम्बर 2016, हिंदी के नामवर
2. पल-प्रतिपल, 86-87, साहित्य का समकाल-2, आलोचना अंक, अप्रैल 2020-जून 2021
3. सामाजिकी त्रैमासिक, प्रवेशांक, अक्टूबर-दिसम्बर, 2021
4. आलोचना त्रैमासिक, अंक-67, अक्टूबर-दिसम्बर, 2021
5. साहित्य वार्षिकी इंडिया टुडे 2022
6. साखी-34, प्रेमचंद साहित्य संस्थान का त्रैमासिक, जुलाई-2021
7. आलोचना त्रैमासिक, अंक-62, अक्टूबर-दिसम्बर-2019

8. आलोचना त्रैमासिक, अंक-61, जुलाई-सितम्बर. 2019
9. आलोचना त्रैमासिक, अंक-68, जनवरी-मार्च, 2022
10. बनास जन, अंक-53, वर्ष-14, जीवन और झूठ की जुगलबंदी: मध्यकालीन आख्यान, मार्च-2022

वेबलिंक

1. EMBLER, W. (1965). THE LANGUAGE OF CRITICISM. *ETC: A Review of General Semantics*, *22*(3), 261–277. http://www.jstor.org/stable/42574130
2. Taleb-Khyar, M. B. (1991). The Languages of Literary Criticism. *Callaloo*, *14*(3), 611–618. https://doi.org/10.2307/2931465
3. Fowler, R., & Mercer, P. (1969). CRITICISM AND THE LANGUAGE OF LITERATURE: SOME TRADITIONS AND TRENDS IN GREAT BRITAIN. *Style*, *3*(1), 45–72. http://www.jstor.org/stable/42945010
4. Singer, I. (1956). The Language of Aesthetics. The Hudson Review, 9(2), 226–243. https://doi.org/10.2307/3847365
5. Smallwood, P. (1996). The Definition of Criticism. *New Literary History*, *27*(3), 545–554. http://www.jstor.org/stable/20057370
6. Marković S. (2012). Components of aesthetic experience: aesthetic fascination, aesthetic appraisal, and aesthetic emotion. *i-Perception*, *3*(1), 1–17. https://doi.org/10.1068/i0450aap

7. Showalter, E. (1975). Literary Criticism. *Signs*, *1*(2), 435–460. http://www.jstor.org/stable/3173056
8. https://www.academia.edu/6720390/Linguistic_Philosophy_in_Jainism
9. https://www.academia.edu/17804897/Sapir_Whorf_Hypothesis
10. Levin, S. R. (1965). Modern Linguistics: Its Development and Scope. *The Journal of Higher Education*, *36*(3), 137–146. https://doi.org/10.2307/1979528
11. Saihood, Abbas. (2021). Linguistic developments from the perspective of the modern. İlköğretim Online. 20. 10.17051/ilkonline.2021.03.148. https://www.researchgate.net/publication/353752249_Linguistic_developments_from_the_perspective_of_the_modern
12. https://www.psychiatrictimes.com/view/jacques-lacan-best-and-least-known-psychoanalyst
13. https://www.freud.org.uk/education/resources/who-was-sigmund-freud

शोध विमर्श

भाषा, गद्य और सभ्यता का विकास

प्रियंका कुमारी सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
हिन्दी विभाग, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

शोध-सारांश : प्रस्तुत आलेख में मनुष्य की चेतना तथा सभ्यता के विकास के क्रम में भाषा के स्वभाव में होने वाले परिवर्तन का विश्लेषण है। चेतना और भाषा का संबंध अन्योन्याश्रित है। इसी प्रकार सभ्यता के विकास और अपने परिवेश पर मानव-जाति के नियंत्रण का संबंध भी अन्योन्याश्रित है। परिवेश पर नियंत्रण के लिए परिवेश का गहन व विस्तृत ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान भाषा के माध्यम से विश्लेषित-संश्लेषित होता है और इसका संचयन भी भाषा में होता है। भाषा के स्वरूप-परिवर्तन में ज्ञान की और इस प्रकार सभ्यता के विकास की भूमिका के अध्ययन-विश्लेषण के माध्यम से भाषा के गद्यात्मक होते जाने के कारणों को इस आलेख में समझने का प्रयास किया गया है। सभ्यता के विकास-क्रम में मनुष्य का समाज से तथा विभिन्न समाजों का आपस में संबंध जैसे-जैसे जटिल हुआ है उसी क्रम में साहित्य की भाषा गद्यात्मक होती गई है और गद्य-विधाओं की भरमार के साथ-साथ कविता भी छंद-लय त्यागकर गद्य हो गई है। यह गद्यमयता साहित्यकार का अपना चुनाव है या मनुष्य की चेतना और सभ्यता का प्रतिफलन, इस आलेख का उद्देश्य इस परिघटना को समझना भी है।

शब्द-संकेत : भाषा, चेतना, गद्य, सभ्यता, बाह्य तथ्यात्मक जगत, सम्प्रेषण।

भाषा की परिभाषा देते हुए आमतौर पर कहा जाता है कि भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों को दूसरे मनुष्यों तक सम्प्रेषित करता है। भाषा की यह परिभाषा भाषा के केवल एक पक्षया उसके एक प्रकार्य मात्र को बताता है। भाषा मनुष्य के भावों/विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम भर नहीं है। यह मनुष्य की विशिष्ट प्राकृतिक मानसिक-शारीरिक क्षमता (फैकल्टी)[1] है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने बाह्य परिवेश से प्राप्त सूचनाओं को ज्ञान के रूप में संश्लेषित करता है। भाषा मनुष्य की चेतना का आधार है। संज्ञा के रूप में चेतना का अर्थ है- ज्ञान, होश, याद, बुद्धि आदि तथा क्रियापद में चेतना का अर्थ होता है होश में आना, सावधान होना, बुद्धि-विवेक से काम लेना। ज्ञान, बुद्धि, स्मृति का आदि का संबंध बाह्य जगत से मनुष्य के मानस की निरंतर प्रतिक्रिया से है और होश में आने या सावधान होने या बुद्धि-विवेक से काम लेने का संबंध बाह्य तथा आभ्यंतर पर मनुष्य के नियंत्रण से है।

संगीतात्मक नाद से बनी छंदयुक्त लयात्मक भाषा आदिम मनुष्य के उल्लास व मांगल्य भाव की अभिव्यक्ति की भाषा थी। यह भाषा मनुष्य के कुछ सामूहिक भावों की अभिव्यक्ति में कुछ हद तक सक्षम थी लेकिन बाह्य तथ्यात्मक जगत को समझने व उससे प्राप्त सूचनाओं के व्यापक पैमाने पर विश्लेषण-संश्लेषण के लिए यह समर्थ नहीं थी। इसके लिए भाषा को गद्य का रूप लेना अवश्यम्भावी था।

चेतना-सम्पन्न होने की और चेतने की क्षमता अन्य जीवों की तुलना में मनुष्य में अत्यधिक है और इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य के पास जटिल संरचना वाली भाषा को रचने और उसका प्रयोग करने की क्षमता है। युवाल नोआह हरारी कहते हैं कि जंतुओं के समक्ष वास्तविकता के दो स्तर होते हैं- एक तो उनका परिवेश जिसे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी बाह्य तथ्यात्मक जगत कहते हैं तथा दूसरा है जंतुओं के आत्मनिष्ठ अनुभव अर्थात् दुःख, दर्द, भय, आनंद, उल्लास आदि। अन्य जंतुओं से इतर मनुष्यों के लिए वास्तविकता का एक तीसरा स्तर भी होता है जिसे हरारी इंटरसब्जेक्टिव रिएलिटी कहते हैं जिसके अंतर्गत ईश्वर, मुद्रा, सामाजिक नैतिकताएं, नियम, राष्ट्र, व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि आते हैं।[2] इस तीसरे स्तर की वास्तविकता का अस्तित्व मनुष्य की भाषा के बाहर कहीं नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव-भाषा वास्तविकता को परिभाषित भी करने के साथ-साथ उसकी रचना करने का भी साधन है।

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

Priyanka Kumari Singh

साहित्यिक अनुवाद : संवेदनशीलता एवं भावना के स्तर पर

प्रियंका कुमारी सिंह

ब्रह्मांड के अनंत विस्तार में एक कण के समान होते हुए भी पृथ्वी मनुष्यों के लिए बहुत विशाल है। इस विशाल पृथ्वी और इसकी विविधरूपा प्रकृति में जीवन के तौर-तरीके भी विविधरूपी हैं। इसमें अपने उद्‌भव से लेकर आज तक मनुष्य ने अपने क्रमिक जैविक तथा सांस्कृतिक विकास की कई मंजिलें पार की हैं और अपने अनुभवों से अर्जित ज्ञान को विविध कला रूपों में संचित किया है। साहित्य उन सभी कला रूपों में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भाषा में होता है और इस कारण यह मनुष्य मात्र की भावनात्मक, कलात्मक या बौद्‌धिक अभिव्यक्ति का सबसे सहज साधन रहा है। दुनिया के अलग-अलग भौगोलिक तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों में रहते हुए मनुष्यों के अलग-अलग समुदायों ने अलग-अलग भाषाएँ, अलग-अलग संस्कृतियाँ तथा जीवन को देखने समझने के अलग-अलग दृष्टिकोण विकसित किए। ये अलग-अलग दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक होते हैं क्योंकि इस विविधधर्मी विशाल दुनिया को समझने-देखने, इसमें अपने अस्तित्व को बनाये रखने में कोई इकलौता दृष्टिकोण कारगर सिद्‌ध नहीं हो सकता। अलग-अलग संस्कृतियों तथा उनसे जुड़ी विश्व दृष्टियों को जानना-समझना सबसे अधिक साहित्य के माध्यम से होता है। जैसे हर भाषा (बोलने वालों की संख्या के आधार पर छोटी हो या बड़ी) एक विश्व दृष्टि को अपने में समाहित किये रहती है, उसी तरह उस भाषा में रचा गया साहित्य उस विश्व दृष्टि के व्यावहारिक पक्ष को मूर्त रूप प्रदान करता है। इन सभी विश्व दृष्टियों को, अलग-अलग भाषाओं के साहित्य को किसी एक भाषाभाषी तक पहुँचाने का साधन अनुवाद ही है। साहित्य के अनुवाद ने मनुष्य मात्र की एकता को प्रतिपादित करने के साथ-साथ एक मनुष्य समाज के संघर्ष से दूसरे मनुष्य समाज को प्रेरित करने तथा उन्नति का मार्ग तलाशने में योगदान किया है।

साहित्य में अनुवाद महज सूचनाएँ देने या मनोरंजन भर के लिए सीधी-सपाट कथा सुनाने के लिए नहीं होता। मनुष्य मात्र में एकता व मैत्री-स्थापना के महत्वपूर्ण सेतु के रूप में इसकी भूमिका निर्विवाद है। जिन भाषाओं के साहित्य में परस्पर अनुवाद की परंपरा रही है, उन भाषाओं को बोलने वाले समाज भी भावना और संवेदना के स्तर पर जुड़े दिखते हैं। निर्मला जैन के अनुसार साहित्य का अनुवाद एक भाषा के पाठ का दूसरी भाषा में रूपांतर भर नहीं होता बल्कि यह एक सांस्कृतिक संप्रेषण होता है। अत: यह अनुवाद ऐसा होना चाहिए जो जिसमें स्रोतभाषा के साहित्य में चित्रित-वर्णित समाज का सांस्कृतिक स्पंदन सुनाई दे। साहित्यिक अनुवाद में दो स्तरों पर इस स्पंदन, संवेद्‌नशीलता तथा भावना का संबंध होता है। साहित्य में अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में जब हम स्पंदन, संवेदनशीलता तथा भावना का संबंध कहते हैं तो एक ओर तो इससे साहित्यिक अनुवाद का उद्‌देश्य तथा इसका महत्व समझ में आता है। दूसरा, इससे साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया समझ में आती है। इस आलेख में इन दोनों ही स्तरों की समीक्षा का प्रयास किया गया है।